क्या निराकार परमात्मा से मिलन मना सकते है?

शिव का कोई शारीरिक अथवा सांसारिक रूप नहीं है, बल्कि दिव्य एवं आत्मिक रूप - दिव्य ज्योति स्वरूप है। हम परमात्मा शिव से तभी मिल सकते हैं जब हमें सांसारिक रूप की स्मृति न आये और जब हम स्वयं भी आत्मिक स्वरूप में स्थित हो क्योंकि नियम यह है कि अव्यक्त स्थिति में टिक कर ही अव्यक्त को देखा जा सकता है। यदि हम स्वयं के शरीर के भान में टिके होंगे अथवा सांसारिक रूपों की स्मृति में होंगे अर्थात् किसी न किसी शरीरधारी ही की स्मृति में होंगे तो हम अशरीरी अर्थात् निराकार परमात्मा से मनोमिलन नहीं मना सकते। 'शिव' का कोई कायिक रूप नहीं है बल्कि उनका रूप आत्मा के रूप-जैसा बिन्दु के आकार वाला है। अत: हम भी जब बिन्दु-स्थिति में होंगे तभी उस परमपिता से आनन्दमय मिलन का आत्मिक, अभूतपूर्व एवं अत्यन्त अनमोल सुख ले सकेंगे। 'शिव' तो एक हैं, बाकी सबमें तो आज काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि में से किसी न किसी प्रकार का विष भरा हुआ है। अत: यदि हम कल्याण एवं आनन्द के इच्छुक हैं तो हमें अपने मन को विष से हटाकर, शिव में ही उसका एकीकरण करना होगा और परम-आत्मा से मिलन मनाने के लिए देह की सुधि-बुद्धि भुलाकर आत्मा-भाव से स्थित होना होगा। तभी जीवन का सच्चा सुख प्राप्त कर सकते हैं, सर्व मनोरथों में से सच्चा मनोरथ पूरा होगा, सभी रसों से उत्तम रस प्राप्त होगा। सम्बन्धों का सामूहिक एवं सच्चे सम्बन्ध का अनुभव होगा।

परमात्मा शिव ही 'पापकटेश्वर' और 'मुक्तेश्वर' भी हैं। वही कल्याण करने वाले तथा काल-कंटक दूर करने वाले हैं। परन्तु यह जानने से क्या लाभ है? जैसे डॉक्टर के पास जाकर रोगी दवाई लेता है, वैसे ही आप भी तो परमात्मा शिव के पास जाकर अमर वरदान प्राप्त कर सदा के लिए रोग-शोक, जरा-मृत्यु और दु:ख एवं अशांति से छूट जायेंगे।

हम शिव के पास जायें कैसे?

आप पूछेंगे कि परमात्मा शिव के पास जायें कैसे और उनसे वरदान कैसे लें? शिव परमात्मा तो अशरीरी हैं। अत: उनके पास 'बिन-पग' अर्थात् पांव बिना ही जाना होता है और 'बिन-कर' अर्थात् हाथों के बिना ही उस दाता से लेना होता है! आप सोचेंगे कि पांवों के बिना भला हम उनके पास कैसे जायेंगे और हाथों के बिना उससे कैसे वरदान लेंगे?

देखो, शरीर वाले पास शरीर से जाना होता है और जिसका शरीर ही न हो उसके पास बिना शरीर के जाना होता है। अत: पहले तो आप देह अभिमान छोड़ो अर्थात् यह भूलो कि आप देह हो, बल्कि यह याद करो कि आप 'आत्मा' हो। आत्मिक नाते से ही आपका शिव परमात्मा के साथ सम्बन्ध है, इसी नाते से ही आपका उनसे मिलन होगा। अत: आत्मा के स्वरूप में स्थित हो जाओ। परमात्मा के पास जाने का साधन तो मन ही है। अत: मन रूपी पांव से शिव बाबा के पास जाओ, बुद्धि रूपी हाथों द्वारा उससे वरदान लो। मन द्वारा तो आप बहुत तीव्र गति से जा सकते हैं।

आप पूछेंगे कि मन द्वारा कैसे जायें, कहां जायें? वैसे भी संसार में जिसके साथ स्नेह होता है, उसके बारे में मनुष्य कहता है कि - 'मेरा मन तो उसके पास है। मेरा तन भले ही यहां है, परन्तु मन तो वहां लगा रहता है।' जबकि शिव परमात्मा से हमारा स्नेह है, हमारा तन यहां रहते हुए भी मन वहां जा सकता है। हम संसार में माता से, पिता से, सखाओं से, शिक्षकों से आदि-आदि से स्नेह कर सकते हैं परन्तु परमात्मा शिव तो हमारे माता-पिता, सखा सुहृद सभी कुछ हैं। अत: उनके साथ तो हमारा सभी नातेदारों के सामूहिक स्नेह से कई गुणा अधिक स्नेह होना चाहिए। परन्तु यदि उतना ज्यादा स्नेह नहीं भी है तो कम से कम उन सभी के सामूहिक स्नेह जितना तो होना ही चाहिए क्योंकि उनके साथ तो हमारे सभी नाते हैं। परन्तु आश्चर्य की बात देखिए कि आजकल लोग कहते हैं कि 'जब हम परमात्मा शिव को याद करने बैठते हैं तो हमें अपनी माता, पत्नी, भगिनी अथवा बच्चा याद आ जाता है।' देखिए तो, उन सभी के सामूहिक प्यार-जितना प्यार होना तो एक ओर रहा, आज उनमें से एक के जितना भी प्यार नहीं है, तभी तो परमात्मा के बजाए देह के नाते याद आते हैं। इसका कारण यह है कि स्वयं 'देह-भान' में होते हैं। यदि वे देह को ही भूलकर आत्म-स्थिति हो तो दैहिक नातेदारों की बजाए आत्मा के पिता परमात्मा ही की याद आती रहेगी।

अब हमें यह तो मालूम है कि सूर्य और तारागण से भी पार जो परमधाम, ब्रह्मलोक अथवा शिवलोक है जहां पर प्रकाश ही प्रकाश है, उसमें ज्योति-बिन्दु परमात्मा शिव निवास करते हैं, तो सहज ही स्नेह-पूर्ण रीति से हमारा मन वहां जाना चाहिए। वहां से ही तो हम सब इस संसार में आये हैं और वहां ही हम सभी को वापिस जाना है। अत: अब वहां ही हमें पहले मन से जाना चाहिए। संसार की भी यह रीति है कि जहां मनुष्य को जाना होता है, पहले तो वहां उसका मन जाता है, पीछे वह स्वयं वहां पहुंचता है। तो अब जब हम मन की लग्न शिव बाबा से लगायेंगे और बुद्धि द्वारा उसमें मग्न हो जायेंगे तो इस स्नेह रूपी तार के द्वारा हमें उस सर्वशक्तिमान द्वारा शक्ति रूपी लाइट-माइट मिलेगी हमारी बुद्धि के सभी भण्डारे भरपूर हो जायेंगे।

उस लाइट और माइट द्वारा ही हमारे पूर्वकाल के विकर्म दग्ध होंगे और विकर्म दग्ध होने से ही हम मुक्ति को प्राप्त होंगे। अत: शिव के साथ मन से लग्न लगाकर मग्न हो जाना ही उस पापकटेश्वर से पाप काटने की सहायता लेना तथा उस मुक्तेश्वर से मुक्ति का वरदान पाना है। परन्तु आज इस सूक्ष्म विधि-विधान को कोई जानता ही नहीं है, इसलिए ही संसार शिव के अमर वरदान से वंचित है।

अत: शिवरात्रि के शुभ अवसर पर हम तो विशेष तौर पर भारतवासियों का तथा सारे संसार का ध्यान इस ओर आकर्षित करते हैं कि अवढर दानी शिव बाबा हमें अब जो ईश्वरीय ज्ञान एवं सहज राजयोग नाम के दो वरदान दे रहे हैं, वह प्राप्त करके सभी श्रेष्ठता को प्राप्त करें। रंक से राव, कौड़ी तुल्य से हीरे तुल्य या नर से नारायण बनने की यही युक्ति है। आज भारत के सभी नेता भी मानते हैं कि यहां से गरीबी हटाना सहज काम नहीं है। वास्तव में गरीबी का मूल कारण आलस्य, फूट तथा विकार है। सभी को मालूम रहे कि भारत को फिर से सोने का देश बनाने वाले अमर वरदानी तो परमपिता परमात्मा शिव ही हैं, उनको भूलने से ही भारत का यह हाल हुआ है।

जगन्नाथपुरी। 'प्लेटिनम जुबली' कार्यक्रम का दीप प्रज्ज्वलित कर उद्घाटन करते हुए सब-कलेक्टर त्रिलोचन प्रधान, पूर्व अध्यक्ष देवराज दास, बाबा अबधुत ब्रह्मानंद दास, ब्र.कु.निरूपमा, ब्र.कु.अनुपमा।

दिल्ली (लोधी रोड)। ऑगल इंडिया लि. में तनाव प्रबंधन पर आयोजित कार्यशाला में भाग लेने के पश्चात् ग्रुप फोटो में हैं निदेशक एन.के.भराली, ब्र.कु.गिरिजा, ब्र.कु.पीयूष तथा अन्य।

जयपुर। 'स्नेह-मिलन' कार्यक्रम का दीप प्रज्ज्वलित कर उद्घाटन करते हुए समाज सेवी आ.डी.बाहेती, एडवोकेट सुनील एवं ब्र.कु.पूनम।

धर्मशाला (हि.प्र.)। 'प्लेटिनम जुबली' कार्यक्रम का दीप प्रज्ज्वलित कर उद्घाटन करते हुए हिमाचल प्रदेश के रोजगार एवं सामाजिक मंत्री किशन कपूर, ब्र.कु.अमीरचंद साथ में हैं ब्र.कु.उमा।

पेठ वडगांव (कोल्हापूर)। मेडिकल एसोसिएशन के अध्यक्ष भांजवे साहब को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.संदीप तथा ब्र.कु.सुनंदा।

शिकोहाबाद (यू.पी.)। 'स्नेह मिलन' कार्यक्रम को संबोधित करते हुए सी.जी.एम. राजेश्वर शुक्ला तथा मंचासीन हैं डॉ.उमेश, राधाशुक्ला बहन, ब्र.कु.पूनम तथा अन्य।